अहमदाबाद महानगरपालिका द्वारा मनाए जा रहे "हेरिटेज़ वीक" के संदर्भ में अहमदाबाद पारसी पंचायत द्वारा आयोजित समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : २९ दिसंबर, २०१७)

- मुझे आज के इस कार्यक्रम में भाग लेकर बहुत ही खुशी महसूस हो रही है। अहमदाबाद महानगरपालिका हेरिटेज़ वीक मना रही है और इस मौके पर आज यहाँ अहमदाबाद पारसी पंचायत द्वारा एक समारोह का आयोजन किया गया है। मैं इस समारोह में उपस्थित होकर गौरव और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।
- अहमदाबाद शहर में हेरिटेज़ सिटी महोत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस मौके पर पारसी पंचायत ने भी इस समारोह को आयोजित करके पारसी समाज का इतिहास, उसका अतीत और उसकी उपलब्धियां, उसका योगदान इन सभी के बारे में पूरी जानकारी प्रस्तुत करने की कोशिश की है, इसलिए मैं पारसी पंचायत के पदाधिकारियों और उनके सभी सहयोगियों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ तथा शुभकामनायें देता हूँ।
- जर्थुस्त्र के धर्म को माननेवाले पारसी लोग प्राचीन इरान देश में बसे हुये थे और वहाँ से ये भारत आये। भारत के खास तौर पर गुजरात के संजान बंदरगाह पर उनका आगमन हुआ और इसके बाद वे यहाँ ही बस गये।
- इस देश में पारसी प्रजा का बहुत ही गौरवशाली इतिहास रहा है। इस प्रजाने देश को अलग-अलग क्षेत्रों में बुद्धिजीवी, प्रतिभाशाली और उद्यमशील ऐसे बहुत ही बड़े-बड़े व्यक्ति दिये है। इस समाज में इस बात पर ज़ोर दिया जाता है की इंसान के विचार, उसकी वाणी तथा व्यवहार नेक होने चाहिये। विचार, वाणी और व्यवहार से ही मनुष्य नेक इंसान बन सकता है।

- पारसी समाज में अग्नि का भी बहुत महत्व है। यह समाज अग्नि पूजक समाज है। अग्नि एक ऐसा तत्व है जो सौन्दर्य, पवित्रता और शुद्धता लाकर इंसान को ईश्वर की और मोड़ता है। पवित्र अग्नि के पास से सुख-संपत्ति, लंबी उम्र, ज्ञान, बुद्धि और शक्ति मांगी जाती है। अग्नि हमेशा शुद्ध है इसलिये पवित्र अग्नि को दिव्य शक्ति तथा सर्वोच्च आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक माना गया है। अग्नि सभी मैले पदार्थों का नाश करती है, इसलिए अग्नि से अधिक शुद्धता किसी में भी नहीं है। भारत में प्राचीन काल से ही यज्ञों की परंपरा चली आ रही है। इन यज्ञों में भी अग्नि का महत्व स्वीकार किया गया है। ऐसा लगता है की भारत के वैदिक धर्म, हिन्दू धर्म तथा पारसीओं के धर्म में बहुत सी समानताएं है। अवेस्था भाषा और संस्कृत भाषा में भी काफी समानता है।
- पारसी समाज संख्या की दृष्टि से छोटा है लेकिन इसका योगदान बहुत बड़ा है। ईरान से आये हुये पारसी भाई-बहन यहाँ के जीवन में पूरी तरह से समरस हो गये हैं। वे हमारे जीवन में संस्कृति में तथा रीति-रिवाज में इस तरह से समाविष्ट हो गये है जैसे दूध और शक्कर आपस में घुल-मिल जाते है।
- पारसीओं का सर्वोच्च धर्म स्थान दक्षिण गुजरात में उदवाडा में स्थित है जिसे पारसी परिवारों के द्वारा सबसे बड़ी आस्था का स्थान माना जाता है। पारसी समाज का देश की उन्नति तथा कल्याण में बहुत बड़ा योगदान रहा है। जमशेदजी टाटा अपनी दीर्घ दृष्टि के लिये जाने जाते है तो दादाभाई नवरोजजी अपनी देश भक्ति के लिये जाने जाते है। जमशेदजी तथा जीजीभोई अपनी उदारता के लिये तथा वाडिया अपने बहु स्तरीय योगदान के लिये जाने जाते है। फ़ील्ड मार्शल मानेक शाह हमारी सेना के गौरव रहे है। होमी भाभा अणुविज्ञान के क्षेत्र में बहुत बड़ी प्रतिभा थी। ऐसी बड़ी-बड़ी कई प्रतिभाएं इस समाज ने हमारे मुल्क को दी है। इसलिये हिंदुस्तान हमेशा पारसी समाज का ऋणी रहेगा।

- भाइयों और बहनों, आदरणीय दादाभाई नवरोजजी की १००वीं पुण्यतिथि के मौके पर एक टिकिट का विमोचन किया गया है। वे भारतीय इतिहास के एक महान प्रतिभाशाली व्यक्तित्व थे। आज के इस अवसर पर देश की आज़ादी की लड़ाई में महान सेनानी दादाभाई नवरोजजी का राष्ट्रप्रेम याद करने योग्य है। पूज्य गांधीजीने दादाभाई नवरोजजी के लिये एक पत्र में कहा था कि भारतवासी आपको इस तरह देखते है जैसे बच्चे अपने पिता को। बाल गंगाधर तिलक दादाभाई नवरोजजी के भारी प्रशंसक थे । उन्होंने कहा था कि हम भारतीयों को ब्रिटीश पार्लमेन्ट में यदि किसी एक सदस्य को भेजना हो तो बिना शक हम दादाभाई नवरोजजी को सर्व सम्मति से चुन सकते है। ऐसे महान व्यक्तित्व के सम्मान में आज पोस्टल डिपार्टमेन्ट के द्वारा टिकिट जारी किया गया है, यह हम सब लोगों के लिये गौरव की बात है।
- इस अवसर पर एक दो छोटी-छोटी बातों का उल्लेख करके मैं अपना वक्तव्य समाप्त करूंगा। पहली बात यह है कि पारसी समाज पुराना भी है और नया भी है। इसका मतलब यह है कि इस समाज ने अपनी परम्पराओं को बनाये रखा है और साथ-साथ बदलते हुये ज़माने के साथ अपने को आधुनिक भी बनाया है। पारसी समाज में एक तरफ हम उनके पुराने रीति-रिवाज तथा तौर-तरीकें देखते है उसके साथ-साथ दूसरी तरफ हम इन्हें आधुनिक समाज के रूप में भी देख सकते है। परंपरा तथा आधुनिकता का यह मेल पारसी समाजसे सीखने योग्य है।
- पारसी समाज की सबसे बड़ी खासियत यह है की वो मानते हैं –"जियों और जीने दों।" इस दृष्टि से देखा जाये तो यह पारसी समाज उदार दिल वाला है। इस समाज के योगदान के बारे में जितना भी कहा जाये वह कम है। यहाँ पर अहमदाबाद शहर के अलग-अलग क्षेत्रों में पारसी समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में योगदान के बारे में हमें बताया गया। चाहे उद्योग का क्षेत्र हो, चाहे उड्डयन का क्षेत्र हो, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे भिन्न-भिन्न व्यवसायों का क्षेत्र हो सभी क्षेत्रों में पारसी समाज ने

अहमदाबाद के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अहमदाबाद के विकास के साथ-साथ पारसी समाज का गौरवपूर्ण इतिहास भी जुड़ा हुआ है। यह हम सभी के लिये बड़े गौरव की बात है।

- आपने मुझे इस मौके पर यहाँ आमंत्रित किया इसके लिये में आपका बहुत आभारी हूँ । मेरे मन में हमेशा से पारसी समाज के बारे में जानने की इच्छा और रूचि बनी रहती है। कुछ समय पहले हमने राजभवन में पारसी समाज के कुछ प्रमुख लोगों को आमंत्रित किया था और उनसे हमने उनके समाज के बारे में, इसके इतिहास के बारे में तथा उनके सामाजिक योगदान के बारे में जानने की कोशिश की थी। यह समाज बहुत छोटा है मगर योगदान में बहुत बड़ा है और यही इस समाज की विशिष्टता है। आज के इस अवसर पर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।